

SANSKRIT GRAMMAR

TOOLKIT

A Panacea for Sanskrit - Vyakaran in a Nut-Shell



NK ACADEMY

The direction of success

CBSE | ICSE | SSC | COMMERCE | SCIENCE

☎ 8879511601

विषयानुक्रमणिका

• संज्ञाएँ एवं परिभाषाएँ	०२
• माहेश्वर सूत्राणि	०३
• शब्दरूपाणि	०३
• धातुरूपाणि	०४
• सङ्ख्या	०४
• सन्धिः	०५
• समासाः	०६
• उपपद विभक्तयः	०७
• प्रत्ययाः	०८
• अव्ययाः	०९
• प्रश्न निर्माणम्	०९
• वाच्य परिवर्तनम्	१०
• समय-लेखनम्	११
• उपसर्गाः	११



N.K. Mishra

Achary | M.A. | B.Ed. | C.T.E.T. | M.P. SET

C R E D I T S

Compiled by : Mr. Nand Kishor Mishra

Designing : Mr. Nilesh Patel

Published by : NK Academy

Distributor - Educationdial™
(Complete Education Network)
9322810065

संज्ञाएँ एवं परिभाषाएँ

गुण-	(अदेङ्गुणः) अ, ए, ओ, को गुण कहते हैं।
वृद्धि-	(वृद्धिरादैच्) आ, ऐ, औ को वृद्धि कहते हैं।
उपधा-	(अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा) अन्तिम वर्ण से पहले आने वाले वर्ण को उपधा कहते हैं।
सम्प्रसारण-	(इग्यणः सम्प्रसारणम्) य, व, र, ल् के स्थान पर इ, उ, ऋ, लृ का होना सम्प्रसारण कहलाता है।
पद-	(सुसिद्धन्तं पदम्) सुबन्त और तिङन्त को पद कहते हैं।
प्रगृह्य-	(ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्) ईकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त, द्विवचन पद प्रगृह्य कहलाते हैं।
अनुनासिक-	(मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः) जिन वर्णों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से होता है उन्हें अनुनासिक कहा जाता है, जैसे-कँ, एँ, हँ इत्यादि।
सवर्ण-	(तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्) दो या दो से अधिक वर्णों का उच्चारण स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न समान हों तो उन्हें सवर्ण कहते हैं।
आगम-	(मित्रवदागम) शब्द या धातु के बीच जो वर्ण या अक्षर मित्रवत् आकर बैठ जाते हैं उन्हें आगम कहते हैं।
आदेश-	(शत्रुवदादेशः) किसी वर्ण को हटाकर जब कोई दूसरा वर्ण उसके स्थान पर शत्रु की भाँति आ बैठता है तो वह आदेश कहलाता है।
अपवाद-	(विशेष नियम) यह नियम सामान्य नियम का बाधक होता है।
उपपद विभक्ति-	किसी पद या शब्द को मानकर जो विभक्ति होती है उसे उपपद विभक्ति कहते हैं, जैसे- श्री गणेशाय नमः में नमः के कारण चतुर्थी विभक्ति होती है।
कृदन्त-	जिन शब्दों के अन्त में कृत् प्रत्यय लगे होते हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं।
गण-	धातुओं को दस भागों में बाँटा गया है, उन्हें गण नाम दिया गया है, जैसे भ्वादि गण, अदादि गण इत्यादि।
परस्मैपद-	परस्मैपद अर्थात् वह पद जिसका फल दूसरे के लिए होता है, जैसे सः पचति (वह पकाता है) यहाँ पकाने की क्रिया का फल दूसरे के लिए होगा पकाने वाले के लिए नहीं।
आत्मनेपद-	आत्मनेपद में क्रिया का फल अपने लिए होता है।
स्पर्श-	(कादयो मावसानाः स्पर्शाः) क से लेकर म तक वर्णों को स्पर्श कहते हैं। ये वर्ण २७ हैं।
अन्तःस्थ-	(यणोऽन्तस्थाः) य, व, र, ल् वर्णों को अन्तःस्थ कहते हैं।
ऊष्म-	(शलः ऊष्माणः) श्, ष्, स्, ह वर्णों को ऊष्म कहते हैं।
विकल्प-	ऐच्छिक नियम विकल्प कहलाते हैं।
अकर्मक-	वे धातुएँ जिनके साथ कर्म नहीं आता अकर्मक धातुएँ कहलाती हैं- लज्जा- सत्ता- स्थिति- जागरणम्- वृद्धि- क्षय- भय- जीवन- मरणम्। शयन- क्रीडा- रुचि- दीप्त्यर्थं धातुगणं तमकर्मकमाहुः ॥
विकरण-	धातु और प्रत्ययों के बीच में आनेवाले शप् (अ) श्यन् (य) आदि प्रत्यय विकरण कहलाते हैं।
संयोग-	(हलोऽनन्तराः संयोगः) स्वर रहित व्यञ्जनों के सामीप्य को संयोग कहते हैं।
प्रत्याहार-	माहेश्वर सूत्रों के आधार पर प्रत्याहारों का निर्माण किया जाता है। प्रत्याहार दो वर्णों से बनता है, जैसे- अक्, इक्, यण्, अच्, अल्, हल् इत्यादि। इन प्रत्याहारों में आदि वर्ण से लेकर अन्तिम वर्ण के मध्य आने वाले सभी वर्णों की गणना की जाती है। प्रत्याहार के अन्तर्गत आदि वर्ण परिगणित होता है लेकिन अन्तिम वर्ण को छोड़ दिया जाता है। यथा- अच् - अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ। इक् - इ, उ, ऋ, लृ। यण् - य, व, र, लृ।

परस्मैपद पठ् (पठना) धातु
लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहु वचन
प्रथमपुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यमपुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (भूतकाल)

अपठत्	अपठताम्	अपठन्
अपठः	अपठतम्	अपठत
अपठम्	अपठाव	अपठाम

लोट् लकार (आज्ञादि)

पठतु	पठताम्	पठन्तु
पठ	पठतम्	पठत
पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् लकार (अनुज्ञा चाहिए)

पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
पठेः	पठेतम्	पठेत
पठेयम्	पठेव	पठेम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

आत्मने पद लभ् (पाना) धातु
लट् लकार (वर्तमान काल)

लभते	लभते	लभन्ते
लभसे	लभथे	लभध्वे
लभे	लभावहे	लभामहे

लङ् लकार

अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लोट् लकार

लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
लभै	लभावहि	लभामहि

विधिलिङ् लकार

लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लृट् लकार

लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

अस् (होना) धातु लट् लकार

अस्ति	स्तः	सन्ति
असि	स्थः	स्थ
अस्मि	स्वः	स्मः

लङ् लकार

आसीत्	आस्ताम्	आसन्
आसीः	आस्तम्	आस्त
आसम्	आस्व	आस्म

लोट् लकार

अस्तु	स्ताम्	सन्तु
एधि	स्तम्	स्त
असानि	असाव	असाम

विधिलिङ् लकार

स्यात्	स्याताम्	स्युः
स्याः	स्यातम्	स्यात
स्याम्	स्याव	स्याम

लृट् लकार

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

कृ (करना) धातु लट् लकार

करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
करोषि	कुरुथः	कुरुथ
करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लङ् लकार

अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लोट् लकार

करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
कुरु	कुरुतम्	कुरुत
करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् लकार

कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लृट् लकार

करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

दशगणाः



श्रु. सतायाम्	अप्रक्षणे	इ. वानाश्रयोः	वि. व्रीडादिभ्यः	ध्रु. अशिष्ये	तुष्. रुदधने	कथि. आशरणे	तम्. विस्तारे	कुली. इन्द्रायशिल्पिने	ध्रु. लोके
भ्रगति	अति	जुहोति	दीप्यति	सुनोति	तुषति	रणदि	तनोति	क्रोपाति	पोरयति
कथि. शप.	सधिमन्तिव. शप.	जुहोन्वादिभ्यः. इतुः	दिवादिभ्यः. इत्यन्.	स्वादिभ्यः. इतुः	तुवादिभ्यः. इतुः	रुधादिभ्यः. इत्यन्.	तनादिभ्यः. इतुः	इन्द्रायिभ्यः. इत्या.	लक्ष्मण. इन्द्रायिभ्यो. किय.
अ	तुष्	उ	व	वु	अ	व	उ	वा	अच्
1079	72	24	140	34	157	25	10	61	440

भ्रगवदति जुहोन्वादि दिवादिस्वादिभ्यः च । तुवादिश्च रुधादिश्च तनुः कुर्यादिपुराण्यः । एते दशगणाः प्रोक्ता मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥

१ एकम्	३५ पञ्चत्रिंशत्	६९ नवषष्टिः
२ द्वे	३६ षट्त्रिंशत्	७० सप्ततिः
३ त्रीणि	३७ सप्तत्रिंशत्	७१ एकसप्ततिः
४ चत्वारि	३८ अष्टात्रिंशत्	७२ द्विसप्ततिः
५ पञ्च	३९ नवत्रिंशत्	७३ त्रिसप्ततिः
६ षट्	४० चत्वारिंशत्	७४ चतुस्सप्ततिः
७ सप्त	४१ एकचत्वारिंशत्	७५ पञ्चसप्ततिः
८ अष्ट	४२ द्विचत्वारिंशत्	७६ षट्सप्ततिः
९ नव	४३ त्रिचत्वारिंशत्	७७ सप्तसप्ततिः
१० दश	४४ चतुश्चत्वारिंशत्	७८ अष्टसप्ततिः
११ एकादश	४५ पञ्चचत्वारिंशत्	७९ नवसप्ततिः
१२ द्वादश	४६ षट्चत्वारिंशत्	८० अशीतिः
१३ त्रयोदश	४७ सप्तचत्वारिंशत्	८१ एकाशीतिः
१४ चतुर्दश	४८ अष्टचत्वारिंशत्	८२ द्वयशीतिः
१५ पञ्चदश	४९ नवचत्वारिंशत्	८३ त्र्यशीतिः
१६ षोडश	५० पञ्चाशत्	८४ चतुरशीतिः
१७ सप्तदश	५१ एकपञ्चाशत्	८५ पञ्चाशीतिः
१८ अष्टादश	५२ द्विपञ्चाशत्	८६ षडशीतिः
१९ नवदश	५३ त्रिपञ्चाशत्	८७ सप्ताशीतिः
२० विंशतिः	५४ चतुःपञ्चाशत्	८८ अष्टाशीतिः
२१ एकविंशतिः	५५ पञ्चपञ्चाशत्	८९ नवाशीतिः
२२ द्वाविंशतिः	५६ षड्पञ्चाशत्	९० नवतिः
२३ त्रयोविंशतिः	५७ सप्तपञ्चाशत्	९१ एकनवतिः
२४ चतुर्विंशतिः	५८ अष्टपञ्चाशत्	९२ द्विनवतिः
२५ पञ्चविंशतिः	५९ नवपञ्चाशत्	९३ त्रिनवतिः
२६ षड्विंशतिः	६० षष्टिः	९४ चतुर्नवतिः
२७ सप्तविंशतिः	६१ एकषष्टिः	९५ पञ्चनवतिः
२८ अष्टाविंशतिः	६२ द्विषष्टिः	९६ षण्णवतिः
२९ नवविंशतिः	६३ त्रिषष्टिः	९७ सप्तनवतिः
३० त्रिंशत्	६४ चतुष्षष्टिः	९८ अष्टनवतिः
३१ एकत्रिंशत्	६५ पञ्चषष्टिः	९९ नवनवतिः
३२ द्वात्रिंशत्	६६ षट्षष्टिः	१०० शतम्
३३ त्रयस्त्रिंशत्	६७ सप्तषष्टिः	१००० सहस्रम्
३४ चतुस्त्रिंशत्	६८ अष्टषष्टिः	१०००० अयुतम्
		१००००० लक्षम्

विशेष -

(क) संख्या शब्दों को लिखने के लिए इकाई, दहाई, सैकड़े का क्रम ग्रहण किया जाता है ।

(अङ्कानां वामा गतिः) । शत से अधिक संख्या के लिए उत्तर या अधिक शब्द का प्रयोग किया जाता है । दो सौ (२००), तीन सौ (३००) आदि संख्याओं के लिए द्विशती, शतद्वयम्, त्रिशती, शतत्रयम् आदि शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है ।

२९२ दिनवत्यधिकशतद्वयम् ।

३३५ पञ्चत्रिंशदधिकशतत्रयम् ।

४९८१ एकाशीत्यधिकनवशतोत्तरचतुः सहस्रम् ।

२३२८१ द्वयशीत्यधिकद्विशतोत्तरत्रयोविंशतिसहस्रम् ।

(छोटी संख्या पहले और बड़ी संख्या बाद में आती है ।

(ख) विंशतिः आदि शब्दों के अन्तिम अक्षर हटा देने से भी क्रमवाचक संख्या शब्द बन जाते हैं, जैसे- विंशः, त्रिंशः, चत्वारिंशः पञ्चाशः आदि ।

(ग) विंशतिः से नवनवतिः तक के संख्यावाचक शब्द एकवचन स्त्रीलिंग में होते हैं तथा शत से अधिक संख्यावाचक शब्द नपुंसकलिंग में होते हैं ।

(घ) नकारान्त संख्यावाचक शब्दों (एकादशन् से नवदशन् तक) में न्... हटा देने से क्रमवाचक विशेषण बन जाते हैं, किन्तु विंशतिः तथा इसके बाद के संख्यावाचक शब्दों के साथ तम्... लगाकर उन्हें क्रमवाचक बनाया जाता है ।

सन्धिः

दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से होने वाला परिवर्तन सन्धि कहलाता है।

(क) स्वर सन्धि (अच् सन्धि) (ख) व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि) (ग) विसर्ग सन्धि

क - स्वर सन्धिः

दीर्घ	गुण	वृद्धि	यण्	अयादि	पूर्वरूप	पररूप	प्रकृतिभाव								
दीर्घ -	(अकः सवर्णो दीर्घः) ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, लृ के सामने अ, ई, उ, ऋ, लृ हों तो दीर्घ एकादेश होता है। राम + अनुजः = रामानुजः। गिरि + ईशः = गिरीशः। गुरु + उपदेशः = गुरुपदेशः। मातृ + ऋणम् = मातृणम्।	गुण -	(अदेङ् गुणः, आद्गुणः) ह्रस्व या दीर्घ अ के बाद इ, उ, ऋ, लृ हों तो क्रम से ए, ओ, अर्, अल्, एकादेश होता है। महा + ईशः = महेशः। सूर्य + उदयः = सूर्योदयः। ब्रह्मा + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः। तव + लृकार = तवल्कारः।	वृद्धि -	(वृद्धिरादैच्, वृद्धिरेचि) ह्रस्व या दीर्घ अ के बाद ए, ऐ या ओ, औ हों तो क्रम से ऐ, औ एकादेश होता है। सदा + एव = सदैव। महा + ओषधि = महौषधिः। उपसर्गान्त अ के बाद ऋ हो तो आर् वृद्धि एकादेश होता है। प्र + ऋच्छति = प्राच्छति। उप + ऋच्छति = उपाच्छति।	यण् -	(इकोयणचि) इ, उ, ऋ, लृ के स्थान पर य, व, र, लृ आदेश होता है असमान स्वर परे हो तो। यदि + अपि = यद्यपि। मधु + अरिः = मध्वरिः। मातृ + अंशः = मात्रांशः। लृ + आकृतिः = लाकृतिः।	अयादि -	(एचोऽयवायावः) ए, ओ, ऐ, औ के स्थान पर अय, अव, आय, आव आदेश होता है। ने + अनम् = नयनम्। पो + अनम् = पवनम्। नै + अकः = नायकः। पौ + अकः = पावकः।	पूर्वरूप -	(एङःपदान्तादति) पदान्त ए, ओ के बाद ह्रस्व अ हो तो पूर्वरूप एकादेश होता है। हरे + अव = हरेऽव। विष्णो + अव = विष्णोऽव।	पररूप -	(एङिपररूपम्) उपसर्गान्त अ के बाद ए, ओ से शुरु होने वाली धातु हो तो पररूप एकादेश होता है। प्र + एजते = प्रेजते। उप + ओषति = उपोषति।	प्रकृतिभाव -	(प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्) प्लुत और प्रगृह्य संज्ञक को अच् परे होने पर प्रकृतिभाव होता है। (सन्धि का नियम लागू होने पर भी सन्धि का न होना प्रकृतिभाव कहलाता है।)
(क)	(निपात एकाजनाङ्) एक अच् वाले अव्ययों की प्रगृह्य संज्ञा होती है। इ इन्द्रः। उ उमेशः।	(ख)	(ईद्वेद्विवचनं प्रगृह्यम्) ईकारान्त, उकारान्त, एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है। हरी एती। विष्णु इमी। लते एते।	(ग)	(सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्थे) सम्बोधन के ओ की दूर से पुकारने पर प्रगृह्य संज्ञा होती है, विकल्प से। शम्भो आयाहि। विष्णो इति। विष्णविति।	(घ)	(अदसो मात्) अदस् शब्द के अम्, अमी की प्रगृह्य संज्ञा होती है। अमी ईशा। अम् आगच्छत।								

ख - व्यञ्जन सन्धि

श्चुत्व	ष्टुत्व	जश्चत्व	चर्त्व	अनुस्वार	परसवर्ण
छत्व	तुगागम	रलोप	णत्व	नुडागम	लत्व
श्चुत्व -	(स्तोःश्चुना श्चुः) सकार, तवर्ग के स्थान पर शकार चवर्ग होता है पहले या बाद में शकार, चवर्ग हो तो। कस् + चित् = कश्चित्। सत् + चित् = सच्चित्। यज् + नः = यज्ञः।	ष्टुत्व -	(ष्टुना ष्टुः) सकार, तवर्ग के स्थान पर षकार टवर्ग होता है पहले या बाद में षकार, टवर्ग हो तो। रामस् + षष्ठः = रामषष्ठः। तत् + टीका = तटीका। उत् + डयनम् = उडयनम्। इष् + तः = इष्टः।	जश्चत्व -	(झलां जशोऽन्ते) पद के अन्त में पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा या उच्च वर्ण हो उसके बाद स्वर हो, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ हो या य, र, ल, व, ह, हो तो पहले को तीसरा होता है। वाक् + ईशः = वागीशः। अच् + अन्तः = अजन्तः। षट् + आननः = षडाननः। सत् + आचारः = सदाचारः। सुप् + अन्तः = सुबन्तः। वाक् + हरिः = वाग्हरिः।

चर्त्व - (खरि च) खर् परे हो तो झल् के स्थान पर चर् आदेश होता है। शब्द के अन्त में दूसरा, तीसरा, चौथा हो उसके बाद पहला, दूसरा या श्, ष्, स् हो तो उसी वर्ण का पहला वर्ण हो जाता है।
सद् + कारः = सत्कारः। दिग् + पालः = दिक्पालः। लभ् + स्यते = लप्स्यते।

अनुस्वार - (मोऽनुस्वारः) पदान्त म् को अनुस्वार होता है व्यञ्जन परे हो तो।
हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे। शामम् + याति = शामं याति।

परसवर्ण - (अनुस्वारस्य यदि परसवर्णः) अपदान्त म् को परसवर्ण होता है अर्थात् आगे आनेवाले वर्ण का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है, यच् परे हो तो।
गम् + गा = गङ्गा। सम् + चितः = सच्चितः। कम् + टकः = कण्टकः।
गुम् फितः = गुम्फितः। शाम् + तः = शान्तः।

लत्व - (तोर्लि) तवर्ग के बाद ल् हो तो त् को ल् होता है। न् के स्थान पर अनुनासिक लँ होता है। तत् + लीनः = तल्लीनः। महान् + लाभः = महौल्लाभः।

छत्व - (शश्छोऽटि) पद के अन्त में पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा हो उसके बाद श् हो उसके बाद स्वर हो य, र, ल, व, ह हो तो श् को छ् होता है।
तत् + ध्रुवा = तच्छ्रुवा। तत् + शिवम् = तच्छिवम्। तत् + श्रेण = तच्छ्रेण। तत् + श्लोकेन = तच्छ्लोकेन।

तुगागम - (छे च) ह्रस्व स्वर के बाद छ् आए तो तुगागम होता है। दीर्घ स्वर के बाद छ् आए तो विकल्प से तुगागम होता है। स्व + छः = स्वच्छः। वि + छेदः = विच्छेदः।
लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया। आ + छादनम् = आच्छादनम्।

रलोप - (रो रि / द्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः) र् के बाद र् हो तो पहले र् का लोप हो जाता है तथा उसके पहले वाला स्वर दीर्घ हो जाता है।
निर् + रोगः = नीरोगः। निर् + रसः = नीरसः। अन्तर् + राष्ट्रिय = अन्ताराष्ट्रिय।

णत्व - (रषाभ्यां नो णः समानपदे) एक ही पद में ऋ र्, ष् से परे न को ण होता है।
नरा + नाम् = नराणाम्।

नुडागम - (ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्) ङ् ण् नान्त पद से परे ह्रस्व स्वर को हुट् णुट् नुट् आगम होता है। तस्मिन् + इति = तस्मिन्निति।

षत्व - (आदेश प्रत्ययोः) इ, उ और कवर्ग से परे स् को ष् होता है। रामे + सु = रामेषु।

अनुनासिक - यदि किसी वर्ण के प्रथम वर्ण के पश्चात् किसी वर्ण का पञ्चम वर्ण हो तो प्रथम वर्ण का उसी वर्ण के पाँचवें वर्ण में रूपांतरण हो जाता है।
वाक् + मयं = वाङ्मयं। षट् + नवतिः = षण्णवतिः। सत् + मति = सन्नति।
जगत् + नाथं = जगन्नाथं। अप् + मयं = अम्मयं। एतत् + न = एतन्न।

(ग) विसर्ग सन्धि

उत्वम् रत्वम् सत्वम् लोपः

उत्वम् - (अतोरोरप्लुतादप्लुते) (हशि च) विसर्ग के पहले अ हो उसके बाद अ हो या तीसरा, चौथा, पाँचवाँ हो या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग को उ होता है।
(अ उ को गुण सन्धि होकर ओ हो जाता है तथा पूर्वरूप सन्धि एवं अवग्रह आ जाता है।) प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः। सः + अहम् = सोऽहम्।

रत्वम् - विसर्ग के पहले अ, आ न हो उसके बाद स्वर हो या तीसरा, चौथा, पाँचवाँ हो या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग को र होता है।
निः + बलः = निर्बलः। मुनिः + अयम् = मुनिरयम्।
शिशुः + हसति = शिशुर्हसति।

अपवाद - अकारान्त अव्यय परे से विसर्ग को र होता है, सामने स्वर या व्यञ्जन हो तो।
पुनः + अत्र = पुनरत्र। अन्तः + हितम् = अन्तर्हितम्।

सत्वम् - (विसर्जनीयस्य सः) विसर्ग के बाद श्, च्, छ् हो तो विसर्ग को 'श्' स्, त्, ध् एवं क् हो तो 'स्' और ष्, द्, व् हो तो 'ष्' होता है।
कः + चौरः = कश्चौरः। कः + चित् = कश्चित्।
नमः + तुभ्यम् = नमस्तुभ्यम्। नमः + कारः = नमस्कारः।
रामः + ठक्कुरः = रामष्ठक्कुरः। रामः + टीकते = रामष्टीकते।

लोप - (क) सः, एषः के विसर्ग का लोप होता है सामने अ को छोड़कर कोई अन्य स्वर या व्यञ्जन हो तो।
(ख) विसर्ग के पहले अ हो उसके बाद अ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो।
(ग) विसर्ग के पहले आ हो उसके बाद स्वर हो या तीसरा, चौथा, पाँचवाँ हो या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग का लोप होता है।
सः + एति = स एति। एषः + याति = एष याति।
अर्जुनः + उवाच = अर्जुन उवाच। वाताः + वान्ति = वाता वान्ति।

समास नाम	लक्षण	उदाहरण
अव्ययीभाव	पूर्वपदप्रधान	यथाशक्ति
तत्पुरुष	उत्तरपदप्रधान	राजपुरुषः
द्वन्द्व	उभयपदप्रधान	मातापितरौ
बहुव्रीहि	अन्यपदप्रधान	नीलकण्ठः
कर्मधारय	विशेषण-विशेष्य	नीलोत्पलम्
	उपमान-उपमेय	पुरुषसिंहः
द्विगु	संख्यापूर्वोद्विगुः	पञ्चाङ्गम्

अव्ययीभाव समासः

समास करने पर जो अव्यय (अव्यय नहीं) शब्द अव्यय बन जाए, उसे अव्ययीभाव समास का उदाहरण कहा जाता है। विद्यार्थियों को यह हमेशा याद रखना चाहिए कि अव्ययीभाव समास का उदाहरण जहाँ भी प्रयुक्त होगा वह हमेशा वैसा ही रहेगा अर्थात् उसमें किसी भी प्रकार का, यानी लिङ्ग, वचन आदि का परिवर्तन नहीं होगा। चूँकि 'अव्यय' शब्द का अर्थ ही है जिसमें से कुछ व्यय ना हो वही अव्यय है (न व्ययो भवति यत्र सः अव्ययः) इसलिए जिस समास-विधि से कोई पद अव्यय बन जाए उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। इस समास में प्रायः पहला पद अव्यय होता है और दूसरा पद अव्ययता

उदाहरणार्थ-

अधिहरि। इस उदाहरण में पहला पद अर्थात् 'अधि' अव्यय है, किन्तु दूसरा पद 'हरि' अव्यय है यानी कि यह पद अव्यय नहीं है, किन्तु समास होने के बाद पूरा पद अर्थात् अधिहरि ही अव्यय बन जाता है। इसका विग्रह है- **हरौ इति।**

अव्ययीभाव समास में- (१) पूर्वपद प्रधान होता है। (२) पूर्वपद अव्यय होता है। (३) शब्द के अन्त में नपुंसकलिङ्ग/एकवचन होता है।

(१) अनु (पश्चात् तथा 'योव्यम्') (प्रथम पद में षष्ठी विभक्ति) 'पश्चात्' का अर्थ है 'पीछे'। समास करते समय पीछे के अर्थ में 'अनु' उपसर्ग का प्रयोग होता है -विष्णोः पश्चात्-**अनुविष्णु।**

(२) उप (समीपम्) (प्रथम पद में षष्ठी विभक्ति) समीप के अर्थ में समास होने पर पूर्वपद में प्रायः 'उप' अव्यय प्रयुक्त होता है। नगरस्थ समीपम् - **उपनगरम्।**
यमुनायाः समीपम् - **उपयमुनम्।**

(३) सह (स) (सहित) (प्रथम पद में तृतीया विभक्ति) सहित के अर्थ में होने पर पूर्वपद में प्रायः 'स' अव्यय प्रयुक्त होता है।

चित्रेण सहितम् - **सचित्रम्।**

हृदयेण सहितम् - **सहृदयम्।**

(४) निर् (अभावः) (प्रथम पद में षष्ठी विभक्ति) 'अर्थाभाव' का मतलब है- सम्बन्धित वस्तु का अभाव; जैसे - वृक्षाभाव (वृक्षस्य अभावः) यहाँ पर 'वृक्ष' का अभाव है। इसी शब्द को जब हम समास के साथ कहेंगे तब कहेंगे 'निर्वृक्षम्'। यहाँ उल्लेखनीय है कि 'अर्थाभाव' या 'अभाव' अर्थ के लिए अव्ययीभाव समास में 'निर्' (प्रथम शब्द का पहला अक्षर क्, ख्, तथा प्, फ्, होने पर निर् को निष् हो जाता है) उपसर्ग का प्रयोग होता है।

विघ्नानां अभावः - **निर्विघ्नम्।**

कण्टकानां अभावः - **निष्कण्टकम्।**

शंकानां अभावः - **निःशङ्कम्।**

बाधानां अभावः - **निर्बाधम्।**

(५) प्रति (वीप्सा) (प्रथम पद में द्वितीया - सप्तमी विभक्ति) दिनम् दिनम् इति, दिने दिने - **प्रति दिनम्।**
मासं मासम् इति, मासे मासे - **प्रतिमासम्।**

(६) यथा (अनतिक्रम्य) (प्रथम पद में द्वितीया विभक्ति) 'पदार्थ का उल्लंघन न करना' के अर्थ में- उल्लंघन न करने का अर्थ है - उत्तरपद का अतिक्रमण न करना; जैसे - शक्तिम् अनतिक्रम्य इति - **यथाशक्ति।** यहाँ उत्तरपद है शक्ति। शक्ति का उल्लंघन न करना अर्थात् शक्ति के अनुसार अर्थात् जितनी शक्ति है उतना। इसलिए यथा शक्ति का अर्थ है - शक्ति के अनुसार।
विधिम् अनतिक्रम्य - **यथाविधि।**
इच्छाम् अनतिक्रम्य - **यथेच्छम्।**

तत्पुरुष समासः

जिस समास में उत्तरपद की प्रधानता हो, तत्पुरुष समास कहलाता है; जैसे- राज्ञः पुरुषः = **राजपुरुषः।** इस समास में राज्ञः पूर्वपद है और पुरुषः उत्तरपद है। इस उदाहरण में पुरुषः अर्थात् उत्तरपद की प्रधानता है, इसलिए इसमें तत्पुरुष समास है।

१. व्यधिकरण तत्पुरुषः (क) विभक्ति तत्पुरुषः (ख) नम् तत्पुरुषः (ग) उपपद तत्पुरुषः

२. समानाधिकरण तत्पुरुषः (क) कर्मधारयः (ख) द्विगुः

१. व्यधिकरण तत्पुरुषः

(क) विभक्ति तत्पुरुषः

विभक्ति तत्पुरुष के अन्तर्गत विभक्ति का लोप हो जाता है। इसके भेदों का उल्लेख उदाहरण सहित नीचे किया जा रहा है
द्वितीया तत्पुरुष समास- द्वितीया विभक्ति से युक्त पदों का श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न अर्थों में द्वितीया तत्पुरुष समास होता है। द्वितीया विभक्ति से युक्त पद का अर्थ यह है कि इसके विग्रह के पूर्वपद में द्वितीया विभक्ति होती है। उदाहरण-

कृष्णं श्रितः - **कृष्णाश्रितः।**
अरण्यं अतीतः - **अरण्यतीतः।**
कूपं पतितः - **कूपपतितः।**

तृतीया तत्पुरुष समास- इसके विग्रह के पूर्वपद में तृतीया विभक्ति होती है; जैसे-
सुखेन हीनः - **सुखहीनः।**
हरिणा प्रातः - **हरिप्रातः।**
विद्यया हीनः - **विद्याहीनः।**

चतुर्थी तत्पुरुष समास- इसके विग्रह के पूर्व पद में चतुर्थी विभक्ति होती है; जैसे-
पाठ्या शाला - **पाठशाला।**
विश्रामाय स्थानम् - **विश्रामस्थानम्।**

पञ्चमी तत्पुरुष समास- इसके विग्रह के पूर्व पद में पञ्चमी विभक्ति होती है; जैसे-

चौरात् भयम् - **चौरभयम्।**
भयात् भीतः - **भयभीतः।**
लतायाः च्युतः - **लताच्युतः।**

षष्ठी तत्पुरुष समास- इस समास के अन्तर्गत विग्रह के पूर्व पद में षष्ठी विभक्ति होती है; जैसे-

राज्ञः पुरुषः - **राजपुरुषः।**
आत्मनः ज्ञानम् - **आत्मज्ञानम्।**
राष्ट्रस्य पतिः - **राष्ट्रपतिः।**

सप्तमी तत्पुरुष समास- इस समास के अन्तर्गत विग्रह के पूर्व पद में सप्तमी विभक्ति होती है; जैसे-
कर्मसु कुशलः - **कर्मकुशलः।**
जले मग्नः - **जलमग्नः।**
वाचि चपलः - **वाक्चपलः।**

ख. नम् तत्पुरुषः

यह समास प्रायः निषेधार्थ (रोकने के लिए) किया जाता है। यदि उत्तरपद का पहला अक्षर स्वर हो तो पूर्वपद 'न' के स्थान पर 'अन्' अथवा उत्तरपद का पहला वर्ण व्यञ्जन हो तो पूर्वपद 'न' के स्थान पर 'अ' शेष रहता है।

न सत्यम् - **असत्यम्।**

न आदिः - **अनादिः।**

ग. उपपद तत्पुरुषः -

इस समास में, उत्तरपद मे, कोई क्रिया अवश्य होती है; जैसे-
कुभं करोति इति - **कुम्भकारः।**
जलं ददाति इति - **जलदः।**
विश्वं जयति इति - **विश्वजित्।**

२. समानाधिकरण तत्पुरुषः

(क) कर्मधारयः

कर्मधारय समास भी तत्पुरुष समास का ही एक भेद है। इसकी विशेषता ही इसका लक्षण है। जिस समास के विग्रह के दोनों पदों में एक ही विभक्ति तथा वचन हों वह कर्मधारय समास होता है।

इसके अतिरिक्त पूर्वपद में प्रायः विशेषण होता है और उत्तरपद में विशेष्य; जैसे - सुन्दरी च सा कन्या। यहाँ पूर्व पद में स्थित 'सुन्दरी' उत्तरपद में स्थित 'कन्या' का विशेषण है। दोनों पदों में प्रथमा विभक्ति है।

विग्रह करते समय पूर्व और उत्तर पदों के बीच में 'च' और पदों के अनुसार "उपमान की प्रथमा विभक्ति का एक वचन" लगेगा।

१. विशेषण-विशेष्य-

नीलं च तत् उत्पलम् (नीलम् उत्पलम्) - **नीलोत्पलम्।**

महान् च असौ पुरुषः (महान् पुरुषः) - **महापुरुषः।**

उत्तमाः च ते जनाः (उत्तमाः जनाः) - **उत्तमजनाः।**

२. उपमान - उपमेय

उपर्युक्त उदाहरणों के अतिरिक्त कुछ अन्य उदाहरण भी कर्मधारय समास के हैं, किन्तु उनमें उपर्युक्त विशेषण-विशेष्य के स्थान पर पूर्वपद में उपमान तथा उत्तरपद में उपमेय होता है। मान लीजिए यह कहा जाए कि- लता कमला की तरह है। 'कमला' की तरह है, इसलिए 'कमला' उपमान है और 'लता' उपमेय है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जिसकी तुलना की जाए वह उपमेय और जिससे की जाए वह उपमान होता है। जिससे तुलना की जाए उसके पीछे इव लगाते हैं। उदाहरण-

घन इव श्यामः - **घनश्यामः।**

पुरुषः सिंहः इव - **पुरुषसिंहः।**

तपः एव धनम् - **तपोधनम्।**

(ख) द्विगुः

संस्कृत व्याकरण में द्विगु समास को व्यक्त करने लिए जो सूत्र दिया गया है वह है- **संख्यापूर्वो द्विगुः** अर्थात् जिस समास का पूर्वपद संख्यावाची हो और समाहार का बोध हो, उसे 'द्विगु' समास कहते हैं। द्विगु समास कर्मधारय समास का एक उपभेद है। नियम-

१. द्विगु समास में समस्त शब्द प्रायः एकवचनान्त व नपुंसकलिङ्ग होता है;

जैसे - **चतुर्युगम्।**

२. कभी-कभी द्विगु समास का समस्त शब्द स्त्रीलिङ्ग भी हो जाता है और स्त्रीलिङ्ग में 'ई' का प्रयोग करते हैं;

जैसे- **अष्टाध्यायी।**

अपवाद - कभी-कभी स्त्रीलिङ्ग में आ भी लगता है; जैसे- **पञ्चखट्वा।**

३. इस समास में विग्रह करने पर दोनों पदों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है और अन्त में 'समाहारः' पद जोड़ते हैं।

त्रयाणां भुवनानां समाहारः - **त्रिभुवनम्**

पञ्चानां तन्त्राणां समाहारः - **पञ्चतन्त्रम्**

द्वन्द्व समासः

जिस समास में सभी पद अर्थात् पूर्वपद और उत्तरपद प्रधान हों, वह द्वन्द्व समास होता है। संस्कृत व्याकरण में इसे स्पष्ट करते हुए कहा गया है - चार्थे द्वन्द्वः। इस सूत्र से स्पष्ट होता है कि द्वन्द्व समास 'च' के अर्थ में होता है;

जैसे- रामः च कृष्णः च - रामकृष्णौ।

(क) इतरेतर द्वन्द्वः

(अन्त के शब्दानुसार लिङ्ग व वचन होता है।) जैसे-

रामः च श्यामः च - रामश्यामौ।

रामः च श्यामः च मोहनः च - रामश्याममोहनाः।

(ख) समाहार द्वन्द्वः

(१. शब्द समूहवाची (जातिवाचक) हो। २. समास बनने पर शब्द के अन्त में नपु. एकवचन होता है।)

जैसे-

गोधूमाः च चणकाः च तेषां समाहारः - गोधूमचणकम्।

कुक्कुटी च मयूर्यौ च तेषां समाहारः - कुक्कुटमयूरि।

(ग) एकशेष द्वन्द्वः

(इस समास में जोड़े का समास होता है और दोनों पदों के स्थान पर किसी एक पद को लेकर द्विवचन अथवा बहुवचन लिखा जाता है।) जैसे-

माता च पिता च - पितरौ।

पुत्रः च पुत्री च - पुत्रौ।

(क) इतरेतर द्वन्द्वः

वैसे तो द्वन्द्व समास युगल अर्थात् जोड़े में ही होता है, किन्तु कहीं-कहीं त्रितय अर्थात् तीन के समूह में भी हो जाता है; जैसे- रामः च कृष्णः च अर्जुनः च - रामकृष्णार्जुनाः, किन्तु इतरेतर द्वन्द्व समास में प्रायः जोड़ों के बीच में समास किया जाता है जैसे -माता-पिता, धर्म-अर्थ, पुत्र-पुत्री। समास करने के बाद

समस्तपद का लिङ्ग वही होगा, जो उत्तर पद का होगा कहीं-कहीं अपवाद भी होता है।

उदाहरण- माता च पिता च - मातापितरौ।

जयः च अजयः च - जयाजयौ।

(ख) समाहार द्वन्द्वः

इस समास के दोनों पद प्रधान हों, ऐसा नहीं है। बल्कि समस्त पद से सामुदायिक अर्थ प्रतीत होता है। इसकी अन्य विशेषता यह है कि यह सदा एक वचन में ही होता है और नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण- त्वक् च सक् च अनयोः समाहारः - त्वक्सजम्।

पाणी च पादौ च एषां समाहारः - पाणिपादम्।

(ग) एकशेष द्वन्द्वः

इस समास में युगल शब्द (जोड़े में शब्द) होते हैं और जोड़े में समास बनाने समय दोनों में से किसी एक पद को ही प्रमुख मानकर उनका समास बनाया जाता है। यदि दो पद हों और द्विवचन में अर्थ निकले तो अन्त में द्विवचन एवं बहुवचन या बहु संख्या में होने वाले शब्दों में बहुवचन अन्त में होता है।

उदाहरण- माता च पिता च - पितरौ।

पतिः च पत्नी च - दम्पति।

बहुव्रीहि समासः

बहुव्रीहि समास को व्यक्त करने के लिए पाणिनि व्याकरण में एक प्रमुख सूत्र है- अनेकमन्यपदार्थे। इसका अर्थ यह है कि - जिस समास में समस्त शब्दों (पदों) से भिन्न कोई अन्य पदार्थ प्रधान हो उसे 'बहुव्रीहि' समास कहते हैं। इस समास में दिखाई देने वाले पदों से भिन्न अन्य कोई पद प्रधान होता है। समासगत सब पद मिलकर उस अन्य पद के अर्थ को ही विशिष्टता प्रदान करते हैं, उनका अपना अर्थ अन्य पद के अर्थ के प्रति गौण हो जाता है अर्थात् उनका अपना अर्थ महत्त्वहीन हो जाता है;

जैसे - चतुर्मुखः - चत्वारि मुखानि यस्य सः

(चार हैं मुख जिसके वह, अर्थात् ब्रह्मा)।

चतुर्मुखः एक समस्त पद है। यहाँ चतुर पद का अर्थ है - चार तथा मुख पद का अर्थ है - मुख (मुख)। यहाँ पर ये दोनों पद प्रधान नहीं हैं, बल्कि ये दोनों पद अपने अपने अर्थों को गौण बनाकर अन्य पद अर्थात् चार मुखों वाले देवविशेष ब्रह्मा को व्यक्त करते हैं।

बहुव्रीहि समास में विग्रह करते समय अन्य पद के लिङ्ग और वचन के अनुसार 'यद्' शब्द का लिङ्ग तथा वचन वही होता है जो अन्य पद का होता है; जैसे - पीतानि अम्बराणि यस्य सः - पीताम्बरः। यहाँ अम्बर शब्द नपुंसकलिङ्ग व बहुवचनान्त है, इसलिए पीत शब्द भी नपुंसकलिङ्ग व बहुवचनान्त ही होगा। बहुव्रीहि समास में समस्तपद विशेषण तथा अन्य पद विशेष्य होता है और विशेष्यानुसार सः आदि सर्वनामों का प्रयोग होता है।

यथा- पीतं अम्बरं यस्य सः - पीताम्बरः।

शुभ्रं आननं यस्याः सा - शुभ्रानना।

प्रभूतं सलिलं यस्मिन् तत् - प्रभूतसलिलम्।

बहुव्रीहि समास के भेद

बहुव्रीहि समास को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जाता है- (१) समानाधिकरण, (२) व्यधिकरण।

(१) समानाधिकरण बहुव्रीहि समास - जहाँ पूर्वपद और उत्तरपद दोनों में समान विभक्ति हो उसे 'समानाधिकरण बहुव्रीहि समास' कहते हैं।

नीलं अम्बरं यस्य सः - नीलाम्बरः।

महान् आशयः यस्य सः - महाशयः।

महान् आत्मा यस्य सः - महात्मा।

(२) व्यधिकरण समास - पाठक्रम में शामिल नहीं है।

उपपद विभक्तयः**पदानि**

अभितः परितः, अभयतः, प्रति, धिक्, विना।

सह, किम्, विना, काणः।

नमः, स्वाहा, स्वस्ति, कुप्।

अनन्तरम्, बहिः, विना, ऋते।

अन्तः, उपरि, पुरः, अधः।

प्रवीणः चतुरः श्रेणीनिर्धारणे

विभक्तयः उदाहरणानि

द्वितीया १. ग्रामं अभितः, परितः, अभयतः वृक्षाः सन्ति।

२. वनं प्रति धावति। ३. धिक् पापिनम्।

४. जलं विना जीवनं नास्ति।

तृतीया

१. रामेण सह सीता वनं गच्छति। २. वार्तालापेन किम्।

३. ज्ञानेन विना मुक्तिः नास्ति। ४. राजा नेत्रेण काणः आसीत्।

चतुर्थी

१. शिवाय नमः। २. इन्द्राय स्वाहा।

३. सर्वेभ्यः स्वस्ति। ४. पिता पुत्राय कुप्यति।

पञ्चमी

१. पठनात् अनन्तरं भोजनं कुरु। २. गृहात् बहिः बालकः क्रीडति।

३. ज्ञानात् विना जीवनं व्यर्थम्। ४. पुस्तकात् ऋते पठनं कथम्।

षष्ठी

१. गृहस्य अन्तः बालकः पठति। २. वृक्षस्य उपरि खगाः सन्ति।

३. गृहस्य पुरः वृक्षः अस्ति। ४. मधस्य अधः श्रोतारः तिष्ठन्ति।

सप्तमी

१. कार्ये प्रवीणः अस्ति। २. वार्तालापे चतुरः अस्ति।

३. कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।

परिभाषा -

वे शब्द या शब्दांश, जिनका अपना कोई अर्थ नहीं होता, लेकिन किसी भी शब्द या धातु के पीछे जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं, 'प्रत्यय' कहलाते हैं।

प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं- १. कृदन्त २. तद्धित ३. स्त्री

१. कृदन्त प्रत्यय- धातु में जिस प्रत्यय को जोड़कर संज्ञा, विशेषण, या अव्यय बनता है, उसको कृत् प्रत्यय कहते हैं और उसके द्वारा जो शब्द सिद्ध होता है उसे कृदन्त कहते हैं। कृदन्त प्रत्ययों के अन्तर्गत

१. क्त्वा २. तुमुन् ३. ल्यप् ४. क्त ५. क्तवतु ६. शत् ७. शानच् ८. तव्यत् (तव्य) ९. अनीयर् (यत्) आदि प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

२. तद्धित प्रत्यय- किसी संज्ञा, विशेषण, अव्यय अथवा क्रिया के बाद जोड़कर उनसे अन्य संज्ञा, विशेषण, अव्यय या क्रिया बनाई जाए उन्हें 'तद्धित' प्रत्यय कहते हैं। तद्धित प्रत्ययों के अन्तर्गत १. मत्पु २. णिनि ३. ठक् ४. त्व ५. तल् आदि प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

३. स्त्री प्रत्यय- पुल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं। स्त्रीलिङ्ग प्रत्ययों के अन्तर्गत १. टाप् २. डीप् आदि प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

१. कृदन्त प्रत्यय

पूर्वकालिक - (क्त्वा, और ल्यप्)

'क्त्वा' प्रत्यय- खाकर, पीकर, पढ़कर, लिखकर आदि अर्थ को प्रकट करने के लिए 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। 'क्त्वा' का 'त्वा' शेष रहता है। व्याकरण नियमों के कारण त्वा को त्वा, ध्वा, ट्वा, ड्वा, इत्वा अथित्वा के रूप में देखा जा सकता है; जैसे- गत्वा, लब्ध्वा, एष्ट्वा, सोढ्वा, पठित्वा, अर्चयित्वा आदि। बालकः भोजनं कृत्वा पठति।

ल्यप् प्रत्यय- यदि धातु से पूर्व उपसर्ग हो तो 'क्त्वा' की जगह 'ल्यप्' का प्रयोग होता है। ल्यप् का 'य' शेष रहता है।

बालकः कार्यं समाप्य गृहं आगच्छति।

यदि 'य' ह्रस्व स्वर के बाद आता हो तो इसके पूर्व त् जुड़कर त्व बन जाता है। बालकः गृहं आगत्य भोजनं करोति।

सेट् अनिट् - जो धातुएँ लट् एवं लृट् लकार में परिवर्तित नहीं होतीं वे सेट् धातुएँ हैं; जैसे- पठ् (पठति-पठिष्यति), खाद् (खादति-खादिष्यति)

जो धातुएँ लृट् लकार में परिवर्तित हो जाती हैं वे अनिट् धातु कहलाती हैं; जैसे- गम् (गच्छति-गमिष्यति) स्था (तिष्ठति-स्थायिष्यति)

प्रत्येक धातु के साथ सदा अनिट् बने रहने वाले प्रत्यय- शत्, शानच्, ल्यप्, अनीयर्।

प्रत्येक धातु के साथ सदा सेट् रहने वाले प्रत्यय- क्त, क्तवतु, क्त्वा, तुमुन्, तव्यत्।

प्रयोजनवाचक (तुमुन् प्रत्यय)

तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग 'के लिए' अथवा 'में' के अर्थ में किया जाता है; जैसे- बालकः पठितुम् विद्यालयं गच्छति। (बालक पढ़ने के लिए विद्यालय जाता है।)

तुमुन् प्रत्यय में 'उन्' का लोप हो जाता है एवं 'तुम्' शेष रहता है। व्याकरण नियमों के कारण तुमुन् को तुम्, धुम्, डुम्, डुम् इतुम् अथितुम् के रूप में देखा जा सकता है; जैसे- गन्तुम्, लब्धुम्, एष्टुम्, सोढुम्, पठितुम्, कथयितुम् आदि।

भूतकालिक ('क्त' एवं 'क्तवतु' प्रत्यय)

संस्कृत में 'भूतकाल' यानी कार्य की समाप्ति अर्थ को प्रकट करने के लिए 'क्त' एवं 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

'क्त' और 'क्तवतु' में क् और उ का लोप हो जाता है और त एवं तवत् शेष रहता है।

'क्त' प्रत्यय को त, ध, न, ट, ढ, ण, इत, अथित के रूप में देखा जा सकता है।

'क्तवतु' प्रत्यय को तवत्, धवत्, टवत्, ढवत्, इतवत्, अथितवत् के रूप में देखा जा सकता है।

चूँकि 'क्त' एवं 'क्तवतु' प्रत्यय धातुसाधित विशेषण बनाते हैं इसलिए इनके शब्दों की तरह रूप चलते हैं।

'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप देव, वन, माला की तरह चलते हैं; जैसे-

गतः गता गतम्।

'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भवत्, जगत्, नदी की तरह चलते हैं; जैसे-

गतवान् गतवती गतवत्।

'क्त' प्रत्यय का प्रयोग कर्मवाच्य एवं भाववाच्य भूतकाल में होता है।

'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग कर्तृवाच्य भूतकाल में होता है। 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग ३११ या ३१२ के अनुसार होता है।

तेन फलं खादितम्। तेन हसितम्।

'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग १२१ के अनुसार होता है। सः फलं खादितवान्।

वर्तमानकालिक (शत् एवं शानच्)

पढ़ता हुआ लिखता हुआ आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए 'शत्' एवं 'शानच्' प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

'शत्' प्रत्यय परस्मैपदी धातुओं के बाद जबकि 'शानच्' आत्मनेपदी धातुओं के बाद जोड़े जाते हैं। 'शत्' प्रत्यय में 'अत्' शेष रहता है।

'शानच्' प्रत्यय आन, मान के रूप में देखा जा सकता है। चूँकि 'शत्' एवं 'शानच्' प्रत्यय धातुसाधित विशेषण बनाते हैं

इसलिए इनके शब्दों की तरह रूप चलते हैं। शत् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भवत्, जगत्, नदी की तरह चलते हैं; जैसे-

गच्छन् गच्छन्ती गच्छत्।

शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप देव, वन, माला की तरह चलते हैं। लभमानः लभमाना लभमानम्।

तव्यत् प्रत्यय

'तव्यत्' प्रत्यय का प्रयोग 'चाहिए' अथवा 'योग्य' अर्थ में होता है। तव्यत् प्रत्यय में त् का लोप होकर तव्य शेष रहता है;

जैसे- कृ + तव्यत् = कर्तव्य

नियम-

१. तव्यत् प्रत्यय के रूप देव, वन, माला की तरह चलते हैं; जैसे- गन्तव्यः गन्तव्या गन्तव्यम्

२. धातु से तव्यत् प्रत्यय होने पर धातु के प्रथम स्वर (इ, उ, ऋ, लृ) को क्रम से (ए, ओ, अर, अल्) हो जाता है;

जैसे-

नी + तव्यत् = नेतव्य

धु + तव्यत् = ध्रौतव्य

कृ + तव्यत् = कर्तव्य

३. यदि धातु सेट् है तो धातु और तव्यत् प्रत्यय के बीच में (इट्) इ लग जाता है; जैसे- पठ् + तव्यत् = पठितव्य

भू + तव्यत् = भवितव्य

४. 'तव्यत्' प्रत्यय में कर्ता में तृतीय विभक्ति और कर्म में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे-

तेन ग्रन्थः पठितव्यः। (उसके द्वारा ग्रन्थ पढ़ा जाना चाहिए)

५. अकर्मक धातु में 'तव्यत्' से युक्त क्रिया प्रथमान्त, नपुंसकलिङ्ग एकवचन की होती है; जैसे-

सर्वेः सुप्तव्यम्। (सबको सोना चाहिए।)

अनीयर् प्रत्यय

संस्कृत में 'अनीयर्' प्रत्यय का प्रयोग तव्यत् प्रत्यय की तरह 'चाहिए' या 'योग्य' अर्थ में होता है; जैसे-पठनीय (पढ़ना चाहिए या पढ़ने योग्य) 'अनीयर्' प्रत्यय के 'र्' का लोप हो जाता है केवल अनीय शेष रहता है; जैसे- पठ् + अनीयर् =

पठनीय

'अनीयर्' प्रत्यय वाले वाक्य में कर्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त होता है अर्थात् इसका प्रयोग कर्मवाच्य में होता है। कहीं-कहीं इसका प्रयोग विशेषण के समान भी होता है; जैसे- क. अस्माभिः पाठः पठनीयः। (हमें पाठ पढ़ना चाहिए) इदं जलं पानीयं अस्ति। (यह जल पीने योग्य है।)

धातु से युक्त अनीयर् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप देव, वन, माला की तरह चलते हैं; जैसे- पठनीयः, पठनीया, पठनीयम्

२. तद्धित प्रत्यय :

(क) मत्पु प्रत्ययः

'मत्पु' प्रत्यय का प्रयोग 'वाला' अथवा 'वाली' अर्थ में होता है, जैसे - धी + मत्पु = धीमान् (बुद्धि वाला)। इस प्रत्यय के साथ पूर्व में केवल शब्द का ही प्रयोग होता है, धातु का प्रयोग इस प्रत्यय के साथ कदाचित् ही देखने को मिलता है। 'मत्पु' प्रत्यय में केवल 'मत्' ही शेष रहता है।

१. जिन शब्दों के अन्त में अ, आ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर होता है, उनमें मत्पु प्रत्यय जैसे का तैसे जुड़ जाता है -

शब्द + मत्पु पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग
अग्नि + मत्पु अग्निमान् अग्निमती अग्निमत्

२. जिन शब्दों के अन्त में तथा उपधा में म् हो अथवा अ या आ हो, तो उनके पश्चात् मत्पु के म् को व् होकर मत् के स्थान पर वत् का प्रयोग होता है, जैसे -

शब्द + मत्पु पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग
गुण + मत्पु गुणवान् गुणवती गुणवत्
नभस् + मत्पु नभस्वत् नभस्वान् नभस्वती नभस्वत्
धनुष + मत्पु धनुष्मत् धनुष्मान् धनुष्मती धनुष्मत्
गुरुत् + मत्पु गुरुत्त्वत् गुरुत्वान् गुरुत्वती गुरुत्वत्
ककुद् + मत्पु ककुद्मत् ककुद्मान् ककुद्मती ककुद्मत्

(ख) णिनि प्रत्ययः

'णिनि' के ण् तथा अन्तिम 'इ' के लोप हो जाने पर 'इन्' शेष रहता है। 'इन्' प्रत्यय का प्रयोग मत्पु की तरह 'वाला' अथवा 'वाली' (अस्य अस्मिन् वा अस्ति) के अर्थ में होता है; जैसे- गुण इन् = गुणिन् (गुण वाला)। इन् प्रत्ययान्त के उदाहरण निम्न हैं- शब्द + इन् पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग
अर्थ + इन् अर्थी अर्थिणी अर्थि

(ग) ठक् प्रत्ययः

संस्कृत में 'ठक्' प्रत्यय का प्रयोग 'सम्बन्धी' अर्थ में भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए होता है। शब्द के साथ जुड़ने पर 'ठक्' को 'इक्' हो जाता है और शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि (अ को आ, इ को ए, उ को औ ऋ को आर्) हो जाती है।

शब्द + ठक् (इक्) प्रत्ययान्त रूप
सप्ताह + ठक् (इक्) साप्ताहिक
इतिहास + ठक् (इक्) ऐतिहासिक
भूमि + ठक् (इक्) भूमिक
धर्म + ठक् (इक्) धार्मिक

(घ) 'त्व' और (ङ) 'तल्' प्रत्ययः

'त्व' और 'तल्' प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए होता है। त्व प्रत्यय का शब्द के साथ 'त्वं' तथा तल् प्रत्यय का शब्द के साथ 'तल्' जुड़ता है। शब्द के अन्त में त्व प्रत्यय जुड़ जाने पर वह शब्द नपुंसकलिङ्ग/ एकवचन के रूप में प्रयुक्त होता है तथा शब्द के अन्त में 'तल्' प्रत्यय (ता) जुड़ने पर वह शब्द स्त्रीलिङ्ग/ एकवचन के रूप में प्रयुक्त होता है। त्व और तल् प्रत्ययान्त शब्दों के उदाहरण निम्नलिखित हैं -

शब्द त्व (प्रत्यय) तल् (ता) प्रत्यय
गुरु गुरुत्वम् गुरुता

३. स्त्री प्रत्ययाः

(क) टाप् प्रत्ययः

अजादिगण में परिगणित पुंलिङ्ग शब्दों को तथा अकारान्त आदि पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए प्रायः टाप् प्रत्यय का प्रयोग होता है। टाप् प्रत्यय के ट् और प् का लोप होकर केवल 'आ' रूप शेष बच जाता है।

१. अजादिगण शब्द - अज + टाप् (आ) = अजा

२. अकारान्त शब्द - अनुकूल टाप् (आ) = अनुकूला

जिन शब्दों के अन्त में 'अक' होता है उनको स्त्रीलिङ्ग बनाते समय भी 'आ' प्रत्यय लगता है, किन्तु शब्द के अन्तिम 'क' से पूर्व के वर्ण में 'इ' लगाई जाती है, जैसे -

अभिभावक + इ + टाप् (आ) = अभिभाविका

गायक + इ + टाप् (आ) = गायिका

(ख) डीप् प्रत्ययः

डीप् प्रत्यय में 'इ' व 'ए' का लोप होकर केवल 'ई' शेष रहता है। डीप् प्रत्यय का प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर किया जाता है -

अभिनेत् + डीप् (ई) = अभिनेत्री

गन्त् + डीप् (ई) = गन्त्री

२. नकारान्त शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए डीप् (ई) प्रत्यय का प्रयोग होता है, जैसे -

कामिन् + डीप् (ई) = कामिनी

तपस्विन् + डीप् (ई) = तपस्विनी

३. प्रथम वच के वाचक अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में डीप् (ई) प्रत्यय होता है, जैसे -

कुमार + डीप् (ई) = कुमारी

किशोर + डीप् (ई) = किशोरी

४. ईयसुन् प्रत्यय वाले शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में डीप् (ई) प्रत्यय होता है, जैसे

गरीयस् + डीप् (ई) = गरीयसी

पटीयस् + डीप् (ई) = पटीयसी

५. मत्तुप् प्रत्यय वाले शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में डीप् (ई) प्रत्यय होता है, जैसे -

कीर्तिमत् + डीप् (ई) = कीर्तिमती

धीमत् + डीप् (ई) = धीमती

६. वतुप् (वत्) प्रत्यय वाले शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में डीप् (ई) प्रत्यय लगता है, जैसे -

कलावत् + डीप् (ई) = कलावती

धारावत् + डीप् (ई) = धारावती

७. ङस् (वस्) प्रत्यय वाले शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में डीप् (ई) प्रत्यय होता है, जैसे

विद्वस् + डीप् (ई) = विदुषी

जम्बिवस् + डीप् (ई) = जम्बुषी

८. शत् (अत्) प्रत्यय वाले शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में डीप् (ई) प्रत्यय लगता है और न् का आगम होता है, जैसे -

कथयत् + डीप् (ई) = कथयन्ती

चोरयत् + डीप् (ई) = चोरयन्ती

९. गुणवाचक उकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से डीप् (ई) लगता है, जैसे -

गुरुः + डीप् (ई) = गुर्वी

मृदुः + डीप् (ई) = मृद्वी

१०. पतिबोधक अकारान्त शब्दों से पत्नी बोधक शब्द बनाने के लिए डीप् (ई) प्रत्यय लगता है, जैसे -

गोप + डीप् (ई) = गोपी

नापित + डीप् (ई) = नापिती

११. निम्नलिखित अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए डीप् (ई) प्रत्यय लगता है, जैसे -

कदल + डीप् (ई) = कदली

तरुण + डीप् (ई) = तरुणी

१२. निम्नलिखित अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए डीप् (ई) प्रत्यय से पूर्व आन् का आगम होता है, जैसे -

आचार्य + आन् + डीप् (ई) = आचार्याणी

इन्द्र + आन् + डीप् (ई) = इन्द्राणी

अव्ययाः

अव्यय शब्द वे शब्द होते हैं जो सदा एक जैसे ही रहते हैं, अर्थात् जो शब्द तीनों लिङ्गों में, सभी वचनों में और सभी विभक्तियों में एक से ही बने रहते हैं, उन्हें अव्यय शब्द कहते हैं, जैसे-उच्चैः (ऊँचे), नीचैः (नीचे), शनैः (धीरे) इत्यादि। इनका रूप कभी भी नहीं बदलता। यह निम्नलिखित श्लोक से स्पष्ट है-

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु, सुवासु च विभक्तिषु।

वचनेषु च सर्वेषु, यद्व्येति तुव्ययम् ॥

यद्यपि संस्कृत में अव्यय शब्दों की संख्या बहुत है, लेकिन हम यहाँ पर केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में निर्धारित किए गए अव्ययों का ही अध्ययन करेंगे।

अत्र-तत्र = यहाँ-वहाँ।

अपि = भी।

अधुना = अब, इस समय।

इतस्ततः = इधर-उधर

इदानीम् = अभी।

यथा-तथा = जैसा-वैसा।

विना = बगैर, सिवाय।

वृथा = व्यर्थ, निरर्थक

शनैः = धीरे, धीमे।

सहसा = अचानक।

नूनम् = निश्चय ही, अवश्य।

पुरा = प्राचीन काल में, पहले।

कदा = कब।

यत् = कि।

किमर्थम् = क्यों, किसलिए।

कुतः = कहाँ से, किधर से।

मा = मत

यत्र-कुत्र = जहाँ-कहाँ।

यदा-कदा = जब-कब।

यावत् = जब तक, जहाँ तक।

श्वः = आने वाला कल।

ह्यः = बीता हुआ कल।

सम्प्रति = अब, हाल में, इस समय।

उच्चैः = ऊँचा, ऊँची आवाज से।

इव = की तरह, उपमा दशति हुए।

कदापि = कभी-कभी, किसी समय

बहिः = बाहर (अपादान के साथ भी)।

एव = किसी शब्द द्वारा कहे गए विचार पर बल देने के लिए, ही।

इति = किसी के द्वारा बोले गए शब्दों को उसी प्रकार प्रयुक्त करने के लिए, उपसंहार द्योतक।

किम् शब्द (कौन)

पुं. - कः, कौं, के

स्त्री. - का, के, काः

नपुं. - किम्, के, कानि

कुत्र = कहाँ
क = कहाँ

कदा = कब
(समय) प्रातः सायं
(अवस्था) शैशवे,
बाल्ये

कति = कितना
कियत् = कितना
कतमः = कौन-सा
(संख्या)

प्रश्न निर्माण

कथं किमर्थं कीरशं, कीरशी क कीरशः।

कदा कुत्र कति कः कौं के, का के काः, किं कानि के।

कुतः = कहाँ से

कथम् = कैसे
(क्रिया विशेषण)

कीरशः = कैसा
कीरशी = कैसी
कीरशम् = कैसा(नपुं.)

किमर्थम् = किसलिए
अर्थम्, घतुर्थी,
तुमुन् प्रत्यय

संस्कृत साहित्य एक विशाल महासागर के समान है। वैदिक साहित्य से लेकर उपनिषदों तक और उपनिषदों से आधुनिक साहित्य तक सभी सार्थक वाक्यों के जाल में बंधे हुए हैं। संस्कृत भाषा के वाक्यों में क्रिया के द्वारा जो कहा जाए उसे ही वाच्य कहते हैं।

वाक्य निर्माण की शैली को वाच्य कहते हैं। इसके भेद निम्नलिखित हैं।



ध्यान दीजिए:

1. मूल धातु के बाद 'य' लगाया जाता है।
2. धातु के अन्त में सभी धातुओं में आत्मनेपद (सेवते की तरह) के रूप लगते हैं। जैसे-सेवते, सेवताम्, सेवेत, सेविष्यते (सभी लकारों का क्रम से प्रथम पुरुष एकवचन)
3. ऋकारान्त धातुओं के अन्तिम ऋ को रि हो जाता है। जैसे- कृ = कृ+य+ते (लट् लकार में) = क्रियते, म्रियते, भ्रियते

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सः पाठं पठति त्वं गीतं गायसे सः माम् पश्यति त्वं पुष्पाणि चिनोषि	तेन पाठः पठ्यते त्वया गीतं गीष्यते नेन अहं दृश्ये त्वया पुष्पाणि चोष्यते

2. कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
मया त्वं दृश्यसे मया त्वं आहूयसे शिशुना पचः पीयसे	कर्तृवाच्य अहं त्वाम् पश्यामि अहं त्वाम् आह्वयामि शिशुः पचः पिपति

3. कर्तृवाच्य से भाववाच्य

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
सः लिखति रायः क्षेते मोहनः स्त्रीमिति	भाववाच्य तेन स्वीर्यते रामेण क्षीयते मोहनेन सुष्यते

वाच्य बनाने की विधि

1. कर्तृवाच्य (१२१)

कर्तृवाच्य में क्रिया द्वारा प्रधान रूप से कर्ता ही कहा जाता है तथा कर्ता और क्रिया के पुरुष और वचन समान होते हैं। कर्ता में सदा प्रथमा विभक्ति होती है, परन्तु वचन कर्ता की संख्या के अनुसार होता है। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है; जैसे -

1. रामः पुस्तकं पठति। (सकर्मक क्रिया)
2. यूयं ग्रामं गच्छथ। (सकर्मक क्रिया)
3. रामः वनं गच्छति। (सकर्मक क्रिया)
4. त्वं पुस्तकं पठसि। (सकर्मक क्रिया)
5. अहं फलं खादामि। (सकर्मक क्रिया)
6. शीला पत्रं लिखति। (सकर्मक क्रिया)
7. रामः हसति। (अकर्मक क्रिया)
8. छात्राः हसन्ति। (अकर्मक क्रिया)
9. बालिका लज्जते। (अकर्मक क्रिया)

2. कर्मवाच्य (३११)

कर्मवाच्य में क्रिया द्वारा प्रधान रूप से कर्म ही कहा जाता है। कर्म तथा क्रिया के पुरुष व वचन समान होते हैं और क्रिया का रूप आत्मनेपद में होता है। कर्ता में तृतीया विभक्ति और वचन कर्ता की संख्या के आधार पर होता है, परन्तु कर्ता का कोई प्रभाव क्रिया पर नहीं पड़ता क्योंकि वह कर्म के अनुसार होती है, जैसे -

1. बालकेन पुस्तकं पठ्यते।
2. छात्रेण वृक्षाः दृश्यन्ते।
3. युष्माभिः वयं ताडयामहे।
4. पशुना पक्षिणौ दृश्येते।
5. बालैः कोलाहलः क्रियते।
6. रामलक्ष्मणाभ्यां वनम् गम्यते।
7. नारदेन वेदाः श्रूयन्ते।
8. देवैः गीतानि गीयन्ते।
9. श्यामेन जलं पीयते।
10. ईश्वरेण भूयते।
11. मया त्वं कथ्यसे।
12. मया वार्ता श्रूयते।

कर्मवाच्य क्रिया कैसे बनाई जाए ?

ध्यान दीजिए -

1. मूल धातु के बाद 'य' लगाया जाता है।

2. धातु के अन्त में सभी धातुओं में आत्मनेपद (सेवते) के रूप लगते हैं, जैसे - सेवते, असेवत, सेवताम्, सेविष्यते, सेवेत

(सभी लकारों का क्रम से प्रथम पुरुष/एकवचन)।

3. ऋकारान्त धातुओं के अन्तिम 'ऋ' को 'रि' हो जाता है; जैसे- कृ = कृ + य + ते (लट् लकार में) = क्रियते, म्रियते, भ्रियते

4. स्मृ तथा जागृ के अन्तिम ऋ को अर् होता है; जैसे - स्मृ = स्मर्यते। जागृ = जागर्यते।

5. वच्, वप्, वस्, वद्, स्वप्, के व को उ, यज् तथा व्यध् के य को इ और प्रच्छ तथा बाह के र को ऋ हो जाता है; जैसे -

वच् = उच्यते, यज् = इज्यते, वस् = उष्यते, व्यध् = विध्यते, वह् = उह्यते, प्रच्छ् = पृच्छ्यते, बाह् = गृह्यते।

6. धातु के अन्तिम इ तथा उ दीर्घ हो जाते हैं; जैसे जि = जीयते भु = भूयते चि = चीयते दु = दूयते

7. आकारान्त धातुओं के आ को ई हो जाता है; जैसे- दा = दीयते पा = पीयते रथा = स्थीयते

8. ऋ अन्त वाली धातुओं के 'ऋ' को 'ईर्' तथा 'ऋ' से पहले पवर्ग होने पर उसे 'ऊर्' हो जाता है, जैसे -

स्त् = स्तीर्यते प् = पूर्यते

9. धातु के अन्तिम अक्षर के पहले (उपधा) में यदि कोई अनुनासिक (किसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण) हो तो उसका लोप हो जाता है, जैसे

बन्ध् = बध्यते रज्ज् = रज्यते मन्थ् = मध्यते ग्रन्थ् = ग्रध्यते समान्य रूप में कर्म वाच्य में लट्, लोट्, लृट् और विधिलिङ् लकारों के रूप दिवादिगण की आत्मनेपद धातुओं के समान होते हैं, जैसे-

पठ् = पठ्यते लिख् = लिख्यते
गम् = गम्यते क्रीड् = क्रीड्यते

3. भाववाच्य (३१)

जब अकर्मक क्रियाओं वाले वाक्यों में कर्ता की प्रधानता न होकर क्रिया (भाव) की प्रधानता होती है अर्थात् कर्ता के वचन का क्रिया पर असर नहीं पड़ता। कर्ता में तृतीया विभक्ति और क्रिया में लकारों के प्रथम पुरुष एकवचन (आत्मनेपदी) या प्रत्यय लगी धातुओं में नपुंसक प्रथमा विभक्ति एकवचन में रूप बनते हैं; जैसे -

छात्रेण हस्यते। तेन हस्यते। तैः हस्यते। तेन भूयते। मया भूयते। बालैः चिन्त्यते। त्वया भूयते। आवाभ्यां हस्यते।

कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में प्रयोग होनेवाली क्रियाओं का रूप निम्न प्रकार भू तथा पठ् धातु की तरह बनता है।

भू धातु (होना)

लट् लकार (वर्तमानकाल)

प्रथम पुरुष	भूयते	भूयेते	भूयन्ते
मध्यम पुरुष	भूयसे	भूयेथे	भूयध्वे
उत्तम पुरुष	भूये	भूयावहे	भूयामहे

पठ् धातु (पढ़ना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

प्रथम पुरुष	पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
मध्यम पुरुष	पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
उत्तम पुरुष	पठ्ये	पठ्यावहे	पठ्यामहे

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन करने के नियम

1. कर्तृवाच्य के कर्ता की प्रथमा विभक्ति के स्थान पर कर्मवाच्य में तृतीया विभक्ति की जाती है।
2. कर्तृवाच्य के कर्म की द्वितीया विभक्ति के स्थान पर कर्मवाच्य में प्रथमा विभक्ति की जाती है।
3. कर्मवाच्य में क्रिया का पुरुष/वचन अथवा लिङ्ग व विभक्ति / वचन; कर्म के पुरुष और वचन तथा लिङ्ग विभक्ति के अनुसार हो जाता है।
4. कर्तृवाच्य के कवतु (तवत्) प्रत्यय के स्थान पर कर्मवाच्य में क्त (त) प्रत्यय हो जाता है; जैसे-

कर्तृवाच्य (१२१)

सः पाठं पठति।
सः माम् पश्यति।
त्वम् पुष्पाणि चिनोषि।
सः किम् कृतवान् ?

कर्मवाच्य (३११)

तेन पाठः पठ्यते।
तेन अहम् दृश्ये।
त्वया पुष्पाणि चीयन्ते।
तेन किं कृतम् ?

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन के नियम

1. कर्मवाच्य में कर्ता की तृतीया विभक्ति कर्तृवाच्य में प्रथमा विभक्ति में बदल जाती है।
2. कर्मवाच्य में कर्मकारक की प्रथमा विभक्ति कर्तृवाच्य में द्वितीया विभक्ति में बदल जाती है।
3. क्रिया के पुरुष व वचन कर्म के अनुसार न होकर कर्ता के अनुसार होते हैं। क्रिया आत्मनेपद से परस्मैपद में बदल दी जाती है, जैसे-

कर्मवाच्य (३११)

मया त्वं दृश्यसे।
तेन यूयं दृश्यध्वे।
मया त्वम् आहूयसे।

कर्तृवाच्य (१२१)

अहं त्वाम् पश्यामि।
सः युष्मान् पश्यति।
अहं त्वाम् आह्वयामि।

कुछ उदाहरण - कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में

कर्तृवाच्य (१२१)	कर्मवाच्य (३११)
सः माम् पश्यति	तेन अहम् दृश्ये ।
वयं त्वाम् पश्यामः ।	अस्माभिः त्वं दृश्यसे ।
सोहनः मोहनं पश्यति ।	सोहनेन मोहनः दृश्यते ।
बालकः वृक्षान् गणयति ।	बालकेन वृक्षाः गण्यन्ते ।
त्वं पुष्पाणि चिनोषि ।	त्वया पुष्पाणि चीयन्ते ।
ताः माम् पश्यन्ति ।	ताभिः अहम् दृश्ये ।
सः तौ पश्यति ।	तेन तौ दृश्येते ।
यूयम् पाठं पठथ ।	युष्माभिः पाठः पठ्यते ।
युवाम् किं कुरुथः ?	युवाभ्याम् किं क्रियते ?
ते प्रातः विद्यालयं गच्छन्ति ।	तैः प्रातः विद्यालयः गम्यते ।
सः भोजनं खादति ।	तेन भोजनं खाद्यते ।
ताः किं कुर्वन्ति ?	ताभिः किं क्रियते ?
अहम् त्वां पश्यामि ।	मया त्वम् दृश्यसे ।
ते माम् पश्यतः ।	ताभ्याम् अहं दृश्ये ।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में

भाववाच्य में कर्ता में तृतीया विभक्ति और क्रिया सदा प्रथम पुरुष/ एकवचन या प्रत्यय सहित नपुंसकलिङ्ग प्रथमा विभक्ति/ एकवचन होती है ।

कर्तृवाच्य (११)	भाववाच्य (३१)
सः तिष्ठति ।	तेन स्थीयते ।
सः हसति ।	तेन हस्यते ।

राम चिन्तयति ।

आवाम् हसावः ।

तौ हसतः ।

ते तिष्ठन्ति ।

अहम् स्वपे ।

आवाम् स्वपावहे ।

वयम् हसामः ।

पहले बारह द्विकर्मक धातुओं के (दुह, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्) के गौण कर्म में कर्मवाच्य बनाते समय प्रथमा विभक्ति होती है, परन्तु मुख्यकर्म में द्वितीया ही होती है ।

कर्तृवाच्य (२११)	कर्मवाच्य (३११)
देवः गाम् दुग्धं दोग्धि ।	देवेन गौः दुग्धम् दुह्यते ।
वामनविष्णुः बलिं वसुधां याचते ।	वामनविष्णुना बलिः वसुधां याच्यते ।
पाचकः तण्डुलान् ओदनं पचति ।	पाचकेन तण्डुलाः ओदनं पच्यते ।
राजा अपराधिनं शतं दण्डयति ।	राज्ञा अपराधी शतं दण्ड्यते ।
कृषकः व्रजं पशून् अवरुणद्धि ।	कृषकेण व्रजः पशून् अवरुण्यते ।
बालकः पितरं मार्गं पृच्छति ।	बालकेन पिता मार्गं पृच्छ्यते ।

रामेण चिन्त्यते ।

आवाभ्याम् हस्यते ।

ताभ्याम् हस्यते ।

तैः स्थीयते ।

मया सुप्यते ।

आवाभ्याम् सुप्यते ।

अस्माभिः हस्यते ।

मालाकारः उद्यानं पुष्पाणि चिनोति ।

मालाकारेण उद्यानं पुष्पाणि चीयन्ते ।

गुरुः छात्रं धर्मं ब्रूते ।

गुरुणा छात्रः धर्मम् उच्यते ।

चाणक्यः चन्द्रगुप्तं धर्मं शास्ति ।

चाणक्येन चन्द्रगुप्तः धर्मं शिष्यते ।

सोमदत्तः देवदत्तं शतं जयति ।

सोमदत्तेन देवदत्तः शतं जीयते ।

माता सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति ।

मात्रा सुधा क्षीरनिधिं मथ्यते ।

चौरः सोमदत्तं शतं मुष्णाति ।

चौरिण सोमदत्तः शतं मुष्यते ।

परन्तु इसके ठीक उल्टे शेष द्विकर्मक धातुओं (नी, ह, कृष्, वह) के मुख्य कर्म में कर्मवाच्य में प्रथमा विभक्ति व गौण कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है ।

कर्तृवाच्य (१२१)	कर्मवाच्य (३११)
कृषकः अजां ग्रामं नयति ।	कृषकेण अजा ग्रामं नीयते ।
त्वं अजां ग्रामं हरसि ।	त्वया अजा ग्रामं ह्रियते ।
सः पशून् ग्रामं कर्षति ।	तेन पशवः ग्रामं कृष्यन्ते ।
अहम् मेषं ग्रामं वहामि ।	मया मेषः ग्रामं उह्यते ।

कृषकः अजां ग्रामं नयति ।

त्वं अजां ग्रामं हरसि ।

सः पशून् ग्रामं कर्षति ।

अहम् मेषं ग्रामं वहामि ।

कृषकेण अजा ग्रामं नीयते ।

त्वया अजा ग्रामं ह्रियते ।

तेन पशवः ग्रामं कृष्यन्ते ।

मया मेषः ग्रामं उह्यते ।

समय-लेखनम्

बजे के लिए वादने का प्रयोग किया जाता है ।

चतुर्वादने स्नानं करोमि ।



सवा के लिए सपाद का प्रयोग किया जाता है ।

सपादचतुर्वादने वस्त्राणि धारयामि ।



आधे के लिए सार्ध का प्रयोग किया जाता है ।

सार्धचतुर्वादने वादने भोजनं करोमि ।



पौने के लिए पादोन का प्रयोग किया जाता है ।

पादोनपञ्चवादने विद्यालयं गच्छामि ।

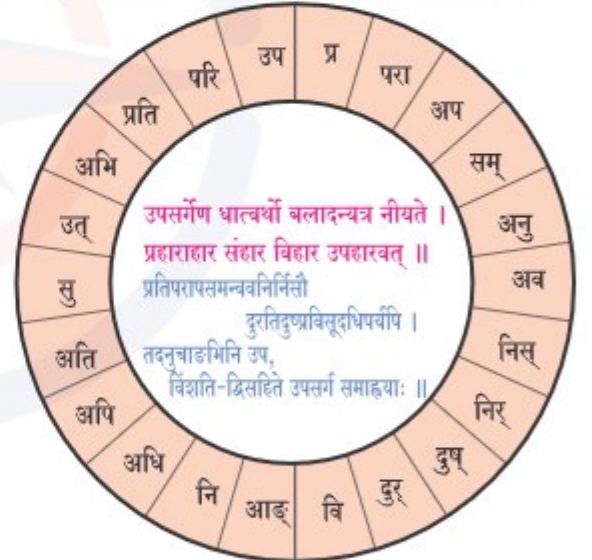


• घड़ी में समय देखकर बताने के लिए वादनम् का प्रयोग किया जाता है । अधुना द्वादश वादनं जातम् ।

• बजे से के लिए वादनतः एवं तक के लिए पर्यन्तम् का प्रयोग किया जाता है । पञ्चवादनतः सप्तवादनं पर्यन्तं पठामि ।

• समय सारिणी बताने के लिए वादने का प्रयोग किया जाता है । रात्रौ दशवादने शयनाय गच्छामि ।

उपसर्गा :



उपसर्गयोगे गम् धातोः रूपभेदाः



प्रहरति आहरति

संहरति विहरति

परिहरति उपहरति



NK ACADEMY

The direction of success

CBSE | ICSE | SSC | COMMERCE | SCIENCE



CBSE	I-X
ICSE	VIII-IX-X
SSC	VIII-IX-X
SCIENCE	XI-XII
COMMERCE	XI-XII

MHT-CET (Engg./Pharmacy)

JEE Mains & Advance

NEET (Medical)

VIII-IX-X

Foundation Course

1. B/204, New Shivam Building, Kulupwadi, Nr. National Park Borivali (E), Mumbai-66.
2. Flat No. 3&4, Shroff New Chawl, Sodawala Lane, Borivali (W), Mumbai.

📞 88795 11601

✉ nkacademymumbai@gmail.com

🌐 www.nkacademy.in

